पाठ – 1

हड़प्पा सभ्यता

अभ्यास

Q1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को उपलब्ध भोजन सामग्री की सूची बनाइए। इन वस्तुओं को उपलब्ध कराने वाले समूहों की पहचान कीजिए।

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों के लिए पौधों और जानवरों के उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध थी । उपलब्ध खाद्य पदार्थों में गेहूं, जौ, दाल, छोले और तिल जैसे अनाज शामिल थे। हड़प्पावासी मछली भी खाते थे। हड़प्पा स्थलों पर जानवरों की हड्डियाँ भी मिलीं हैं , जिनमें भेड़, बकरी, भैंस और सूअर शामिल हैं। मछलियों और पक्षियों की हड्डियाँ भी मिलीं है । आर्कियो-ज़ूलोगिस्ट्स द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि इन जानवरों को पालतू बनाया गया था, लेकिन यह पता नहीं चला है कि हड़प्पावासी इन जानवरों का शिकार करते थे या किसी अन्य शिकारी समुदायों से माँस प्राप्त करते थे। जिन लोगों ने अनाज़ के दानों और बीजों के आधार पर हड़प्पा सभ्यता के लोगों के आहार से संबंधित प्रथाओं के बारे में जानकारी दी थी, उन्हें पुरातन वनस्पतिविदों के रूप में जाना जाता है जो प्राचीन पौधे के विशेषज्ञ थे । और जिन लोगों ने जानवरों की हड्डियों के बारे में जानकारी प्रदान की है उन्हें आर्कियो-ज़ूलोगिस्ट्स या चिड़िया घर-पुरातत्वविदों के रूप में जाना जाता है । पौधों से लिए गए उत्पाद : भोजन जुटाने वाले समुदाय पशु माँस और मछली: शिकार करने वाले समुदाय

Q2. पुरातत्वविद हड़प्पाई समाज में सामाजिक-आर्थिक भिन्नताओं का पता किस प्रकार लगाते हैं? वे कौन सी भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं?

उत्तर : पुरातत्वविदों ने हड़प्पाई समाज में कुछ रणनीतियों जैसे कि शवाधानों का अध्ययन और विलासिता की खोज के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक मतभेदों का पता लगाया । → शवाधान : हड़प्पा स्थलों से मिले शवाधानों में आमतौर पर मृतकों को गर्तों में दफनाया गया था। कभी-कभी शवाधान गर्त की बनावट एक-दूसरे से भिन्न होती थी। कुछ स्थानों पर गर्त की सतहों पर ईंटों की चिनाई की गई थी। कुछ क़ब्रों में मृदभाण्ड तथा आभूषण मिले हैं जो संभवतः एक ऐसी मान्यता की ओर संकेत करते हैं जिसके अनुसार इन वस्तुओं का मृत्योपरांत प्रयोग किया जा सकता था। पुरुषों और महिलाओं, दोनों के शवाधानों से आभूषण मिले हैं। → "विलासिता" की खोज : इस तकनीक का उपयोग कलाकृतियों के अध्ययन से सामाजिक मतभेदों की पहचान करने के लिए किया जाता है , जिसे पुरातत्वविद् व्यापक रूप से उपयोगितावादी और विलासिता के रूप में वर्गीकृत करते हैं। पहली श्रेणी में पत्थर या मिट्टी जैसी सामान्य सामग्रियों से बने दैनिक उपयोग की वस्तुएँ शामिल हैं। यह माना जाता है कि यदि वस्तुएँ दुर्लभ या महंगी, गैर-स्थानीय सामग्री से या जटिल तकनीक से बनी हैं, तो यह विलासिता की श्रेणी से संबंधित है। कलाकृतियों के वितरण से पुरातत्वविदों को जो अंतर दिखाई देते हैं, वे हैं - बहुमूल्य सामग्रियों से बनी दुर्लभ वस्तुएँ आमतौर पर मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा जैसी बड़ी बस्तियों में केंद्रित हैं और शायद ही कभी छोटी बस्तियों में पाई गई ।

Q3. क्या आप इस तथ्य से सहमत हैं कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों की जल निकास प्रणाली, नगर-योजना की ओर संकेत करती है? अपने उत्तर के कारण बताइए।

उत्तर : जल निकास प्रणाली/ड्रेनेज सिस्टम हड़प्पा शहरों की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक थी , जिससे पता चलता है कि उनकी नगर-योजना /टाउन प्लानिंग प्रणाली बहुत मजबूत थी। कारण → सड़कों तथा गलियों को लगभग एक 'ग्रिड' पैटर्न में बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। → ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था और फिर उनके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया गया था। → हर घर का ईंटों के पक्के फर्श से बना अपना एक स्नानघर होता था जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं। यदि घरों के गंदे पानी को गलियों की नालियों से जोड़ना था तो प्रत्येक घर की कम से कम एक दीवार का गली से सटा होना आवश्यक था। → हर आवास गली की नालियों से जोड़ा गया था। मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें ऐसी ईंटों से ढँका गया था जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सके । यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उचित जल निकासी प्रणाली के साथ शहरों की कितनी अच्छी योजना बनाई गई थी और यह भी पता चलता है कि पहले पूरी बस्ती की योजना बनाई गई थी और फिर इसे लागू किया गया था।

Q4. हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइए। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मनकों के निर्माण में प्रयुक्त पदार्थों की विविधता उल्लेखनीय हैः कार्नीलियन (सुंदर लाल रंग का), जैस्पर, स्पफटिक, क्वार्ट्श तथा सेल-खड़ी जैसे पत्थर; ताँबा, काँसा तथा सोने जैसी धातुएँ तथा शंख, फियाॅन्स और पक्की मिट्टी , सभी का प्रयोग मनके बनाने में होता था। कुछ मनके दो या उससे अधिक पत्थरों को आपस में जोड़कर बनाए जाते थे और कुछ सोने के टोप वाले पत्थर के होते थे। इनके कई आकार होते थे जैसे चक्राकार, बेलनाकार, गोलाकार, ढोलाकार तथा खंडित। कुछ को उत्कीर्णन या चित्राकारी के माध्यम से सजाया गया था और कुछ पर रेखा-चित्रा उकेरे गए थे। मनके बनाने की तकनीकों में प्रयुक्त पदार्थ के अनुसार भिन्नताएँ थीं। सेल-खड़ी जो एक बहुत मुलायम पत्थर है, पर आसानी से कार्य हो जाता था। कुछ मनके सेल-खड़ी चूर्ण के लेप को साँचे में ढाल कर तैयार किए जाते थे। इससे कई विविध आकारों के मनके बनाए जा सकते थे।

Q5. आकृति 1.30 को देखें और जो आप देखते हैं उसका वर्णन करें। शव कैसे रखा गया है? इसके पास रखी वस्तुएँ क्या हैं? क्या शरीर पर कोई कलाकृतियां हैं ? क्या ये कंकाल के लिंग का संकेत देते हैं?

उत्तर : आकृति 1.30 में एक हड़प्पाई शवाधान को दिखाया गया है । शवाधान में एक कंकाल दफ़न है। शव को उत्तर-दक्षिण दिशा में रखा गया है। शव के पास कुछ बर्तन और अन्य वस्तुएँ रखी हुई हैं जो बताती हैं कि वे पुनर्जन्म में विश्वास करते थे। हां, शरीर पर एक चूड़ी है और यह इंगित करती है कि यह एक महिला का कंकाल है।

Q6. मोहनजोदाड़ो की कुछ विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : मोहनजोदाड़ो की विशिष्टताए हैं: नगर-योजना / टाउन प्लानिंग :बस्ती दो भागों में विभाजित थी ,

एक छोटा लेकिन ऊँचाई पर बनाया गया और दूसरा कहीं अधिक बड़ा लेकिन नीचे बनाया गया। पुरातत्वविदों ने इन्हें क्रमश दुर्ग और निचला शहर का नाम दिया है। दुर्ग की ऊँचाई का कारण यह था कि यहाँ की संरचनाएँ कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनी थीं। दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जिसका अर्थ है कि इसे निचले शहर से अलग किया गया था।मोहनजोदाड़ो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। इनमें से कई एक आँगन पर केंद्रित थे जिसके चारों ओर कमरे बने थे।

संभवतः आँगन, खाना पकाने और कताई करने जैसी गतिविधियों का केंद्र था, खास तौर से गर्म और शुष्क मौसम में। यहाँ का एक अन्य रोचक पहलू लोगों द्वारा अपनी एकांतता को दिया जाने वाला महत्त्व थाः भूमि तल पर बनी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं हैं। इसके अतिरिक्त मुख्य द्वार से आंतरिक भाग अथवा आँगन का सीधा अवलोकन नहीं होता है। हर घर का ईंटों के पक्के फर्श से बना अपना एक स्नानघर होता था जिसकी नालियाँ दीवार के माध्यम से सड़क की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

कुछ घरों में दूसरे तल या छत पर जाने हेतु बनाई गई सीढ़ियों के अवशेष मिले थे। कई आवासों में कुएँ थे जो अधिकांशतः एक ऐसे कक्ष में बनाए गए थे जिसमें बाहर से आया जा सकता था और जिनका प्रयोग संभवतः राहगीरों द्वारा किया जाता था।दुर्ग पर हमें ऐसी संरचनाओं के साक्ष्य मिलते हैं जिनका प्रयोग संभवतः विशिष्ट सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाता था। इनमें माल-गोदाम और विशाल स्नानागार शामिल है विशाल स्नानागार आँगन में बना एक आयताकार जलाशय है जो चारों ओर से एक गलियारे से घिरा हुआ है। जलाशय के तल तक जाने के लिए इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग में दो सीढ़ियां बनी थीं।

जलाशय के किनारों पर ईंटों को जमाकर तथा जिप्सम के गारे के प्रयोग से इसे जलबद्ध किया गया था। संकेत मिलता है कि इसका प्रयोग किसी प्रकार के विशेष आनुष्ठानिक स्नान के लिए किया जाता था। ड्रेनेज सिस्टम : सड़कों तथा गलियों को लगभग एक 'ग्रिड' पैटर्न में बनाया गया था और ये एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था और फिर उनके अगल-बगल आवासों का निर्माण किया गया था। हर आवास गली की नालियों से जोड़ा गया था। मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें ऐसी ईंटों से ढँका गया था जिन्हें सफाई के लिए हटाया जा सके । सफाई के लिए कुछ अंतराल पर चैम्बर्स के साथ लंबे जल निकासी चैनल प्रदान किए गए थे। ड्रेनेज सिस्टम बड़े शहरों के लिए ही अद्वितीय नहीं था, बल्कि हम इसे छोटी बस्तियों में भी पाते हैं।

Q7. हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाइए तथा चर्चा कीजिए कि ये किस प्रकार प्राप्त किए जाते होंगे।

उत्तर : हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल में पत्थर के टुकड़े, पूरे सीप, तांबा अयस्क आदि थे। शिल्प के लिए आवश्यक कच्चे माल विभिन्न स्रोतों से खरीदे जाते थे : → मिट्टी जैसी कुछ सामग्री स्थानीय रूप से उपलब्ध थी जबकि पत्थर, लकड़ी और धातु जैसे कई पदार्थ जलोढ़ मैदान के बाहर से खरीदे जाने थे। → नागेश्वर और बालाकोट जैसी जगहों से सीप प्राप्त किए जाते थे । → लापीस लाजुली, एक नीले रंग का पत्थर जो शोरतुग़ई , अफग़ानिस्तान से लाया जाता था। → कारेलियन लोथल से , क्योंकि यह एक निकट स्रोत था। → दक्षिण राजस्थान और उत्तर गुजरात से स्टीटाइट। → राजस्थान से धातु। → दक्षिण भारत से सोना और राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र से तांबे को अभियान भेजकर ख़रीदा जाता था । हाल ही में हुई पुरातात्विक खोजें इंगित करती हैं कि ताँबा संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित ओमान से भी लाया जाता था। रासायनिक विश्लेषण दर्शाते हैं कि ओमानी ताँबे तथा हड़प्पाई

पुरावस्तुओं, दोनों में निकल अंश मिले हैं जो दोनों के साझा उद्भव की ओर संकेत करते हैं। तीसरी सहस्राब्दि ईसा पूर्व में दिनांकित मेसोपोटामिया के लेखों में मगान जो संभवतः ओमान के लिए प्रयुक्त नाम था, नामक क्षेत्र से ताँबे के आगमन के संकेत मिलते हैं।

Q8. चर्चा कीजिए कि पुरातत्वविद किस प्रकार अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं।

उत्तर : पुरातत्वविदों ने निम्नलिखित विधियों से अतीत का पुनर्निर्माण किया : → पुरातत्वविद् प्राचीन बस्तियों में उत्खनन का संचालन करते हैं और प्रारंभिक बस्तियों का पता लगाने के लिए लोगों द्वारा छोड़े गए साक्ष्य या विवरणों का उपयोग करते हैं। →पुरातत्वविद् कलाकृतियों और अवषेशो का पता लगाते हैं जैसे कि मुहरें, हड्डियाँ, शिल्प, संरचनाएँ, आभूषण, औजार, खिलौने, वज़न, मिट्टी के बर्तन, धातुएँ, पौधों और जानवरों के अवशेष आदि। → वे विभिन्न समूहों जैसे सामग्री, उपकरण, आभूषण आदि के निष्कर्षों को वर्गीकृत करते हैं। → वे उस संदर्भ के आधार पर कलाकृतियों को अलग करने की कोशिश करते हैं जिसमें वे पाई गयी हों और बाद में ऐसी के आधार पर कलाकृतियों के कार्यों का पता लगाने की भी कोशिश करते है । → इन साक्ष्यों का अध्ययन फिर आर्कियो -बॉटानिस्ट्स और आर्कियो- जूलोजिस्ट जैसे विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है ताकि कार्बन-डेटिंग जैसी तकनीकों के माध्यम से उनके अस्तित्व का पता लगाया जा सके। → पुरातत्वविद उपलब्ध अनाज के अवशेष के माध्यम से भी लोगों की खेती और खाने की आदतों का पता लगाने की कोशिश करते हैं। → वे उस समय के दौरान उपलब्ध उपकरणों के प्रकार के माध्यम से लोगों के पेशे या कामकाजी पैटर्न का पता लगाने की कोशिश करते हैं। → शिल्प और मुहरों के माध्यम से वे अतीत की धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं का पालन करने की कोशिश करते हैं। → धातुओं का इस्तेमाल और लोगों द्वारा पहने गहने लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को दर्शातें है। → अंत्येष्टि और कब्रिस्तान से मिली चीजें, पुनर्जन्म आदि में लोगों के विश्वास होने को दर्शाता हैं

Q9. हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किए जाने वाले संभावित कार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : पुरातात्विक अभिलेख उस समय के दौरान शासकों या शासक प्राधिकरण के बारे में कोई तत्काल उत्तर नहीं देते हैं। मोहनजोदाड़ो में मिली एक बड़ी इमारत को पुरातत्वविदों द्वारा एक महल के रूप में चिह्नित किया गया था, लेकिन इसके साथ कोई सबूत नहीं मिला। एक पत्थर की मूर्ति को "पुजारी-राजा" के रूप में माना गया है क्योंकि पुरातत्वविद मेसोपोटामिया के इतिहास और इसके "पुजारी-राजाओं" से परिचित थे और सिंधु क्षेत्र और मेसोपोटामिया में कई समानताएं पाई गयी थीं। जैसा कि हम देखते हैं कि हड़प्पा सभ्यता के रीति-रिवाज़ों को अच्छी तरह से नहीं समझा गया है और यह जानने के लिए भी उचित साधन नहीं हैं कि क्या उन लोगों के पास राजनीतिक शक्ति थी जो धार्मिक कार्य करते थे कुछ पुरातत्वविदों का मत है कि हड़प्पाई समाज में कोई शासक नहीं था और सभी को समान दर्जा प्राप्त था। दूसरों को लगता है कि कोई एक शासक नहीं था, लेकिन कई शासक थे। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि एक ही राज्य था क्योंकि कलाकृतियों में समानता है , नियोजित बस्तियों के लिए सबूत के तौर पर ईंट के आकार का मानकीकृत अनुपात और कच्चे माल के स्रोतों के पास बस्तियों की स्थापना । अब तक, अंतिम सिद्धांत मान्य लगता है, क्योंकि यह संभावना कम विश्वसनीय लगती है कि पूरा समुदाय सामूहिक रूप से ऐसे जटिल निर्णय लेता होगा और लागू करता होगा।

मानचित्र कार्य

Q10. मानचित्र 1 पर उन स्थलों पर पेंसिल से घेरा बनाइए जहाँ से कृषि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। उन स्थलों के आगे क्रा ॅस का निशान बनाइए जहाँ शिल्प उत्पादन के साक्ष्य मिले हैं। उन स्थलों पर 'क' लिखिए जहाँ कच्चा माल मिलता था।

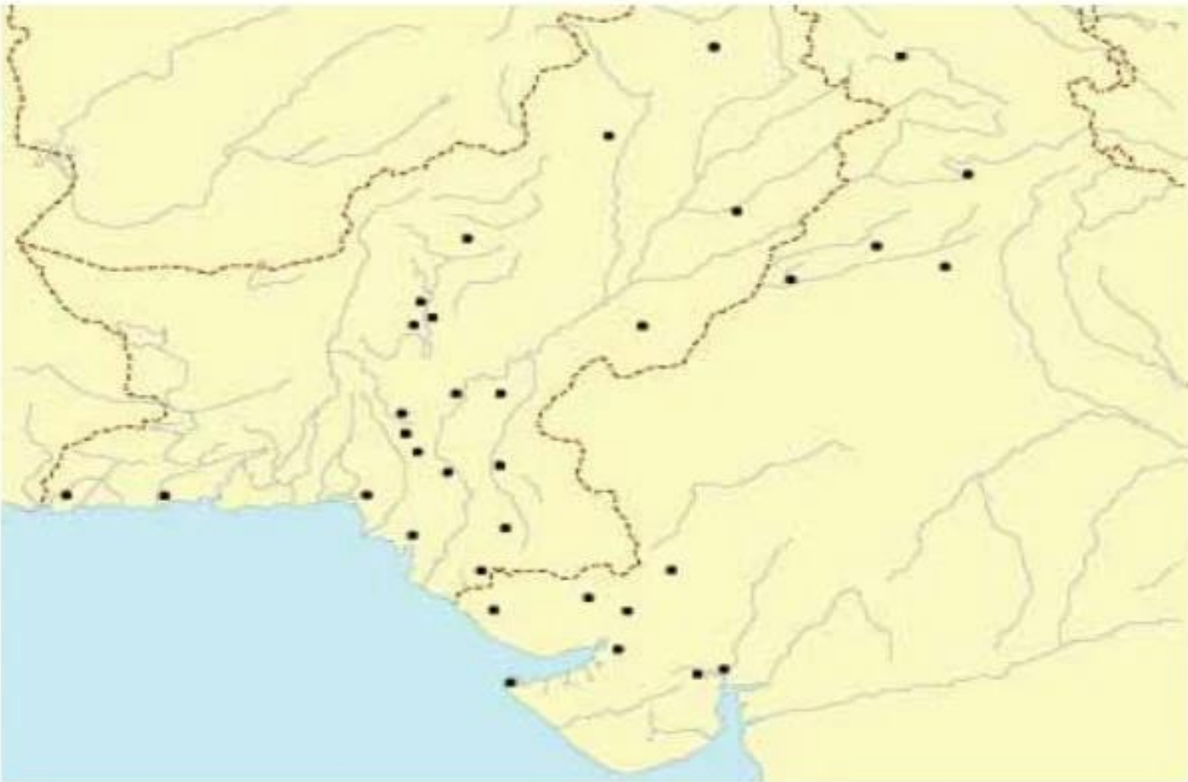

उत्तर : स्वयं करें